

पाठ 4: सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (उत्साह, अट नहीं रही है)

प्रश्न 1: 'उत्साह' कविता में कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए क्यों कहता है?

RBSE 2020

RBSE 2025

कवि 'निराला' एक विद्रोही स्वभाव के कवि हैं। उनके अनुसार, समाज में परिवर्तन, क्रांति या नव-निर्माण के लिए केवल शांति या कोमलता (फुहार/रिमझिम) से काम नहीं चलता, बल्कि इसके लिए **जोश, पौरुष, ऊर्जा और क्रांति की गर्जना** की आवश्यकता होती है। बादलों का गरजना क्रांति और ओज का प्रतीक है। सोए हुए और निराश लोगों में नया उत्साह भरने के लिए कवि बादलों से 'गरजने' का आह्वान करता है।

प्रश्न 2: 'उत्साह' कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

RBSE 2022

'उत्साह' कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है:

- जलप्रदाता के रूप में:** गर्मी से तपती और प्यासी धरती के लोगों को जल प्रदान करके शीतलता और नया जीवन देने वाला।
- क्रांति के प्रतीक के रूप में:** समाज में फैली बुराइयों और शोषण के खिलाफ विरोध (क्रांति) तथा नया उत्साह जगाने वाला।
- नव-निर्माण के रूप में:** नई कविता रचने वाले कवियों के लिए नई कल्पना और ऊर्जा का स्रोत।

प्रश्न 3: 'अट नहीं रही है' कविता के आधार पर फागुन की सुंदरता का वर्णन कीजिए।

RBSE 2023

RBSE 2026

फागुन (वसंत ऋतु) में प्रकृति का सौंदर्य अपने चरम पर होता है। पेड़ों की डालियाँ नए हरे और लाल पत्तों से लद जाती हैं। चारों ओर तरह-तरह के रंग-बिरंगे और सुगंधित फूल खिल जाते हैं, जिनकी महक से हवा मादक हो जाती है और हर घर सुगंध से भर जाता है। पक्षी उल्लास में आकाश में उड़ने लगते हैं। यह प्राकृतिक सौंदर्य इतना अधिक और व्यापक है कि वह कवि की आँखों और मन में पूरी तरह 'अट' (समा) नहीं पा रहा है।

Scholarbit